6

मसीह के लहू के द्वारा मिलाए गए

(2:11-13)

परमेश्वर की महिमामय कलीसिया के उद्देश्य के बारे में इफिसुस के मसीही लोगों को लिखते हुए पौलुस ने उस बदलाव पर ज़ोर दिया जो उनके जीवनों में हुआ था। यह एक प्रकार से नई सृष्टि जैसा था और उसके अस्तित्व का कुछ भाग यहूदियों और अन्यजातियों के बीच भाईचारा था।

पहले मसीह से दूर थे (2:11, 12)

[11]इस कारण स्मरण करो, कि तुम जो शारीरिक रीति से अन्यजाति हो (और जो लोग शरीर में हाथ के किए हुए खतने से खतनावाले कहलाते हैं, वे तुम को खतनारहित कहते हैं) [12]तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, ओर प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वर रहित थे।

आयत 11. पौलुस अन्यजाति मसीही लोगों की पहले की स्थिति पर ज़ोर देते हुए **अन्यजाति** और यहूदी लोगों के बीच अन्तर करने लगा। **इस कारण** (*dio*) का इस्तेमाल इस पहले की स्थिति को अगले भाग से जोड़ देता है जिसका अन्त परमेश्वर की इस उम्मीद के साथ हुआ है कि मसीही लोगों, जिनका उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह से हुआ था भले कामों में चलें। आयत 11 के आरम्भ में आरम्भ के विपरीत जो कुछ पौलुस ने कहा उससे अन्यजातियों से परिवर्तित होने वालों को उसकी गहरी समझ मिलने में सहायता मिलनी थी जो परमेश्वर ने मसीह के द्वारा उनके लिए किया था और जैसा कि उसने ठहराया था जीने में बड़ी निष्ठा मिलनी थी।

शारीरिक (*sarx*) शारीरिक देह के लिए है (देखें रोमियों 1:3) और माननीय स्वभाव की पापपूर्ण स्थिति के लिए भी है (देखें रोमियों 8:1-12)। आयत 11 में इस शब्द का इस्तेमाल शारीरिक देह के लिए ही किया गया है, वही देह जिस पर **हाथ के किए हुए खतने से खतना** किया जा सकता है।

यहूदी लोग अपने आपको "**खतनावाले**" होने के कारण घमण्ड करते थे और अन्य जातियों को अपमान जनक ढंग से "**खतनारहित**" कहते थे। बेशक यह जन्म के बाद आठवें दिन इस्राएल के सब नरों का खतना किए जाने की बात के अब्राहम से आरम्भ होने की कथा को कहा गया है (देखें उत्पत्ति 17:1-27; लैव्यव्यवस्था 12:3)। खतना अब्राहम के द्वारा इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा का चिह्न था और खतना किए जाने का शारीरिक कार्य इस बात की घोषणा था कि यहूदी व्यक्ति इस्राएल का है। वाचा का यह चिह्न वाचा के अनुसार बिताए गए जीवन के साथ भी जुड़ा हुआ था (देखें यिर्मयाह 9:26)। यहूदियों के खतना किए जाने का महत्व इतना अधिक

था कि आरम्भिक कलीसिया में इस पर एक बड़ा विवाद हो गया कि नर अन्यजाति परिवर्तितों को उनके मन परिवर्तन के भाग के रूप में खतना किया जाना चाहिए या नहीं। इस मामले पर विचार किए जाने के लिए यरूशलेम में एक सभा बुलाई गई। प्रेरितों, प्राचीनों और अन्य भाइयों के बीच चर्चा के कारण निष्कर्ष निकाला गया कि खतना सहित व्यवस्था का बोझ अन्यजातियों में से मसीही बनने वालों पर न डाला जाए (प्रेरितों 15:1-35)।

आयत 12. अन्यजातियों में से मसीही बनने वालों की पहले की स्थिति की बात करते हुए पौलुस ने उन पांच बातों को लिखा जो उन में लागू होती थीं। पहले तो वे **मसीह से अलग** थे। गैर मसीही लोग पाप के कारण परमेश्वर से अलग हैं (यशायाह 59:1, 2); केवल उन्हीं लोगों का मसीह के साथ सम्बन्ध हो सकता है जिन्होंने सुसमाचार की आज्ञा मानी है। इस आयत में पौलुस के कहने का जोर इस बात पर था कि अन्यजातियों के पास ऐसा कोई वचन नहीं था जिसमें मसीहा के आने की प्रतिज्ञा हो, और इस कारण उनका यहूदियों की मसीहा की उम्मीद में कोई भाग नहीं था। आखिर मसीहा इस्राएल के द्वारा आया था (रोमियों 9:4, 5)।

दूसरा, वे **इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए** थे। ''प्रजा के पद'' यूनानी भाषा के शब्द (*politeia*) का अनुवाद है जिसका अर्थ *''राज्य''* या *''नागरिकता नागरिक के अधिकार''* हो सकता है।[1] अपनी पूर्व स्थिति में अन्यजातियों से मसीही बनने वालों को परमेश्वर के साथ नागरिकता का कोई अधिकार नहीं था। यहूदियों का मसीह से पहले एक धर्मशास्त्रीय राष्ट्र होने के नाते परमेश्वर के साथ एक वास्तविक सम्बन्ध था। अन्यजातियों का ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं था। परमेश्वर की सर्वोच्च पसन्द से उसने इस्राएल के साथ इस प्रकार से एक वाचा बांधी थी जैसे उसने अन्यजातियों के साथ कभी सम्बन्ध नहीं रखा था। अन्यजातियों को इस्राएल के राष्ट्र की नागरिकता से अलग किया गया था। ''अलग किए हुए'' (*apallotrioō*) ''दूर कर देना'' का सुझाव देता है।[2] नये नियम में ''उस से दूर करना जिस से पहले सम्बन्ध था'' के हवाले में कुलुस्सियों 1:21 और इफिसियों 4:18 में यह शब्द मिलता है।[3] परन्तु यहां इसका अर्थ विशेष सौभाग्य से अलग होने के लिए है। परमेश्वर पुराने नियम के काल में उन लोगों के साथ सम्बन्ध बनाने के लिए बार बार इतिहास में नहीं गया जो इसहाक और याकूब के द्वारा अब्राहम की संतान नहीं थे (उत्पत्ति 14 में मलिकिसिदेक; निर्गमन 2; 3 में यित्रो; और गिनती 22; 23 में बिलाम)।

तीसरा, अन्यजाति **प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे**। ''प्रतिज्ञा'' से पहले यूनानी भाषा में एक उपपद है जो इस वाक्यांश का अर्थ ''प्रतिज्ञा की वाचाओं से अनजान'' बना देता है। यूनानी संज्ञा शब्द *xenos* के द्वारा ''अनजान'' उनके लिए है जो ''किसी के अपने परिवार के न हों।''[4] और इस कारण कुछ ''साझे का न होना''[5] है। ''प्रतिज्ञा'' उद्धारकर्त्ता के आने के सम्बन्ध में परमेश्वर द्वारा पुरखाओं से की गई प्रतिज्ञा के लिए ही होगा (देखें उत्पत्ति 12:1-7; 22:18; 26:4; 28:14)। परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक, याकूब और दाऊद के साथ ''वाचाएं'' या समझौते दिए।[6] पौलुस विशेष रूप से मूसा की व्यवस्था की बात नहीं कर रहा था क्योंकि व्यवस्था इन आरम्भिक वाचाओं में ''जोड़ी गई'' थी (गलातियों 3:19)। गलातियों 3:16-22 में उसने अब्राहम की वाचा और सीनै की वाचा में अब्राहम से की गई वाचा को प्रतिज्ञा की वाचा और बाद वाली वाचा को व्यवस्था की वाचा कहकर उन में अन्तर किया।

चौथा, वे **आशाहीन** थे। चुने हुए इस्राएल देश से बाहर होने के कारण अन्यजातियों का परमेश्वर के साथ वाचा का कोई सम्बन्ध नहीं था और उन्हें मसीहा के आने की कोई प्रतिज्ञा नहीं थी। उनके पास उद्धारकर्त्ता और उद्धार में आशा की कमी थी। अन्यजातियों के मूर्तिपूजक धर्म उन के भविष्य के जीवन की उनकी तड़प को दिखाते थे, परन्तु पौलुस ने इस तथ्य को कहा कि वे *वास्तविक* आशा के बिना हैं। मृत्यु के बाद किसी भी प्रकार की उनकी उम्मीद बिगड़ी हुई थी और झूठी आशा वाली थी। उन्हें परमेश्वर का सीमित ज्ञान था और वे पवित्र शास्त्र और मसीहा की प्रतिज्ञाओं की विरासत से अलग किए गए थे। उनकी पहले की स्थिति को याद दिलाने से अन्यजाति मसीही लोगों ने और भी इस बात की सराहना करनी थी कि अब उन्हें ''[उन के] मसीह में होने के कारण आशा मिली थी'' (कुलुस्सियों 1:27)।

पांचवां, वे **जगत में ईश्वररहित थे।** अन्यजाति क्षेत्र ''इस संसार की रीति पर'' (2:2) अर्थात परमेश्वर से अलग किया हुआ संसार था। छद्म देवताओं के लिए उनकी सेवा में उन्हें सच्चे परमेश्वर के बिना और सच्ची आशा के बिना कर दिया था। गलातियों 4:8 में पौलुस ने अन्यजाति मसीही लोगों की पहले की स्थिति का वर्णन किया: ''पहले तो परमेश्वर को न जानकर उनके दास थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं।'' सच्चे परमेश्वर से अनजान होकर अन्यजाति लोग ''ईश्वर रहित'' (*atheos*) थे। उनकी दशा के पौलुस के मूल्यांकन ने उन्हें परमेश्वर के बिना और संसार में आशारहित छोड़ दिया।

मसीह के द्वारा निकट लाए गए (2:13)

[13]पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो।

आयत 13. बेशक पौलुस के पास अन्यजाति मसीही लोगों के लिए खुशखबरी थी। क्योंकि आयत 4 का आरम्भ ''परन्तु परमेश्वर'' के साथ हुआ जो उस में जो मसीह को जानने से पहले इफिसियों के लोग थे और उसमें जो मसीह में आने पर वे थे बहुत फर्क डाल देता है, सो आयत 13 का आरम्भ **पर अब** के साथ होता है। आयतें 13 से 22 सुसमाचार की आज्ञा मानने से पहले की उनकी स्थिति से बिल्कुल विपरीत हैं। **पहले** ''अब'' से अलग है। **दूर** और **निकट** होने में अन्तर यह था कि यह अन्यजाति मसीही अब **मसीह में** आ गए थे।

पुराने नियम में अन्यजातियों को उन लोगों के रूप में रखा जाता था जो ''दूर'' थे (देखें व्यवस्थाविवरण 29:22; 1 राजाओं 8:41; यिर्मयाह 5:15), जबकि इस्राएलियों को ''निकट'' माना जाता था (भजन संहिता 148:14)। परन्तु इफिसियों 2 के अन्यजातियों का निकट आना यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए है जो मसीह में विश्वासियों का बना एक नया समुदाय है, जैसा कि अध्याय 2 के शेष भाग से पता चलता है।

अब **मसीह के लहू** के कारण यहूदियों और अन्यजाति दोनों को निकट आने की सम्भावना है। यह क्रूस के सम्बन्ध में जहां मसीह ने ''बहुतों के पापों की क्षमा के लिए'' अपना लहू बहा दिया (मत्ती 26:28), क्रूस के संदेश में यह तथ्य है कि अपनी मृत्यु में मसीह ने अपने ऊपर हमारे पाप उठा लिए, ताकि हम अपने ऊपर उसकी धार्मिकता को ले सकें (देखें 2 कुरिन्थियों 5:21)। पापियों के रूप में हम धार्मिकता का कोई भी दावा करने के हक से वंचित थे (रोमियों

6:20)। धार्मिकता से वंचित होने के कारण हम परमेश्वर के साथ तब तक कोई सम्बन्ध नहीं बना सकते हैं, जब तक परमेश्वर हमें धर्मी ठहराए जाने के अपने काम के द्वारा धर्मी न बनाए।

''निकट हो गए'' होने की बात करते हुए बेशक पौलुस परमेश्वर के निकट होने की बात कर रहा था। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने कहा कि इब्रानी मसीही लोगों को ''यीशु के लहू के द्वारा पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया'' था (इब्रानियों 10:19) और फिर उसने उन्हें ''समीप जाने'' के लिए प्रोत्साहित किया (इब्रानियों 10:22)। पवित्र परमेश्वर हमें अपने निकट इसलिए बुला सकता है, क्योंकि उसने वह साधन उपलब्ध करवा दिया है जिसके द्वारा हम उस तक पहुंच सकते हैं और वह साधन मसीह का लहू है। जब हम मसीह में होते तो हम धर्मी ठहराए जाते हैं और धर्मी घोषित किए जाते हैं क्योंकि हम में मसीह को पहन लिया है। परमेश्वर ने क्रूस के ऊपर पाप पर अपना क्रोध उण्डेल दिया ताकि वह पापियों के ऊपर उनके बपतिस्मे में अपनी दया को उण्डेल सके। इस कारण पापियों को धर्मी ठहराने में परमेश्वर सच्चा है (रोमियों 3:26), क्योंकि क्रूस पर लहू में उसके पवित्र स्वभाव ने मांगों को पूरा कर दिया।

यहां पर एक प्रश्न का उत्तर दिया जाना आवश्यक है कि पापियों को धर्मी ठहराने में लहू क्यों आवश्यक था? पुराने नियम के पूरे काल में पशुओं के लहू के बलिदान चढ़ाए जाते थे। वे बलिदान बार बार चढ़ाए जाते थे जो पशुओं के लहू के पाप को हटा देने के अप्रभावी होने को दिखाते थे (इब्रानियों 10:1-4)। परन्तु पशुओं के बलिदान परमेश्वर के असल मेमने अर्थात यीशु मसीह की तस्वीर को दिखाते थे, जिसका बलिदान पाप के प्रायश्चित के लिए सदा के लिए दिया जाना था (यूहन्ना 1:29; इब्रानियों 10:10-14)। संसार के लिए छुटकारा देने के लिए उसका लहू क्यों आवश्यक था? व्यवस्था के अधीन बलिदान के सिस्टम का वर्णन करते हुए लैव्यव्यवस्था 17:11 हमें बताता है, ''क्योंकि शरीर का प्राण लोहू में रहता है।'' अपना लहू बहाने के द्वारा यीशु ने हमारे असिद्ध जीवनों के लिए अपना सिद्ध जीवन दे दिया। वह अपना लहू बहाकर मर गया ताकि हम जी सकें, आत्मिक रूप में भी, अनन्तकाल के रूप में भी।

प्रासंगिकता

मसीह में आशिषें (2:13)

इफिसियों 2 की आशिषें केवल मसीह में ही मिलती हैं मसीह (2:13)। हर व्यक्ति को परमेश्वर के प्रेम, दया और अनुग्रह को मानने के लिए जिसे क्रूस पर मसीह के बलिदान के द्वारा दिया गया, निमन्त्रण दिया जाता है। जो लोग आज्ञापालन के द्वारा इसे मान लेते हैं उन्हें परमेश्वर से अलग होने से बचा लिया जाता है। वे विश्वास करके, भरोसा करके और उसकी बात मानकर उद्धार की परमेश्वर की शर्तों को मान लेते हैं। विश्वास को मान लेने में ''यीशु मसीह का'' बपतिस्मा भी एक कदम है(रोमियों 6:3), जहां उद्धार पाया जाता है। इस प्रकार से परमेश्वर के निमन्त्रण को स्वीकार करने से ''विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से'' मसीह के लहू के द्वारा उद्धार प्राप्त हुआ (2:8)।

जे लॉकहर्ट

टिप्पणियां

[1]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम, ए *ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आ़फ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. एवं संशो. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 528; वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आ़फ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियंस लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑ़फ़ शिकागो प्रैस, 2000), 845 भी देखें। [2]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990),137. [3]वही। [4]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कन्कोर्डेंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 741. [5]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर: इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 73. [6]बुलिंगर, 192.